CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गजेन्द्रमोक्षः

चौखम्भा ओरियन्टालिया • वाराणसी, दिल्ली

5/-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

चौखम्भा राजसेवा ग्रन्थमाला
७३

गजेन्द्रमोक्षः

प्रस्तावनासहित सम्पादक
डॉ० कपिलदेव गिरि, एम० ए०
संस्कृतमहाविद्यालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–५

चौखम्भा ओरियन्टालिया
वाराणसी दिल्ली

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक

चौखम्भा ओरियन्टालिया

पो० आ० चौखम्भा, पो० बाक्स नं० १०३२

वाराणसी–२२१००१ (भारत)

टेलीफोन :- ३३३४७६ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर

(करोड़ीमल कालेज के पास)

दिल्ली–११०००७ फोन : 238790

© चौखम्भा ओरियन्टालिया

-प्रथम संस्करण : 1992)

मूल्य : रु० ३,३०

मुद्रक—श्रीगोकुल मुद्रणालय, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी·

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रस्तावना

महाभारत में गजेन्द्र-मोक्ष की कहानी नहीं है। इस कहानी में जो नाम पर्याय जुड़े हैं उनमें कुछ ऐसा जादू है कि जो सुनता है अभिभूत हो जाता है, श्रद्धा से सिर झुका देता है। श्रीमद्भागवतादि पुराणों में इसका विवरण इस प्रकार है :—

क्षीरसागर में त्रिकूट नाम का एक सुन्दर एवं श्रेष्ठ पर्वत था। वह दस हजार योजन ऊँचा था। उस पर्वतराज त्रिकूट के घोर जंगल में बहुत-सी हथिनियों के साथ एक गजेन्द्र रहता था। वह शक्तिशाली हाथियों का सरदार था। वह मदोन्मत्त होकर हथिनियों के साथ इधर-उधर बाँस-बेंत, झाड़ियों को रौंदता हुआ घूम रहा था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक दिन बड़े जोरों की धूप थी। इसलिए वह व्याकुल हो गया और उसे तथा उसके साथियों को प्यास लगी। पानी की तलाश में वह थोड़ी देर में ही सरोवर के तट पर जा पहुँचा।

गजेन्द्र ने सरोवर में घुसकर जल पिया, फिर स्नान कर के अपनी थकान मिटायी। वह गजेन्द्र अपनी हथिनियों और बच्चों में एक गृहस्थ पुरुष की भाँति मोहग्रस्त हो गया। वह उन्हें नहलाने लगा, अपने सूंढ़ में जल भर कर उन्हें बड़े चाव से पिलाने लगा। वह (गजेन्द्र) भगवान् की मोहनी माया में उन्मत्त हो रहा था। वह भावी विपत्ति को एकदम भूल बैठा था। इसी बीच में प्रारब्ध की प्रेरणा से एक बलवान ग्राह (घड़ियाल) ने क्रोध में भर कर उसका पैर पकड़ लिया। गजेन्द्र ने अपने को छुड़ाने की भरपूर चेष्टा की, परन्तु छुड़ा न सका।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गजेन्द्र और ग्राह अपनी-अपनी पूरी शक्ति से भिड़े हुए थे। कभी गजेन्द्र ग्राह को बाहर खींचता, तो कभी ग्राह गजेन्द्र को पानी के भीतर खींच ले जाता। इस प्रकार लड़ते-लड़ते एक हजार वर्ष बीत गए और कोई भी हारने का नाम नहीं लेता था। इस घटना को देखकर देवता भी चकित हो गए।

अन्त में गजेन्द्र बार-बार जल में खींचे जाने के कारण बहुत कमजोर एवं शिथिल हो गया। न मन में उछाह रहा न देह में बल। गजेन्द्र की शक्ति घट गई। लेकिन ग्राह तो जल का जीव रहा इसलिए उसकी शक्ति घटी नहीं, बल्कि और बढ़ गई। वह बड़े जोर शोर से गजेन्द्र को खींचने लगा। गजेन्द्र का प्राण संकट में पड़ गया और अपने को छुड़ाने में एकदम मजबूर हो गया। वह अपने को छुड़ाने के लिए कुछ देर तक सोचता रहा,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अंत में इस निश्चय पर पहुँचा। यह ग्राह लगता है विधाता की फाँसी बन कर आ गया है और इस से बचना अब मुश्किल है। ऐसी दशा में मैं भगवान् हरि की शरण में अपने को समर्पित करता हूँ। काल बली है और इस से बचने के लिए एकमात्र संबल भगवान् कृष्ण हैं। भगवान् के भय से काल भी डरता है और अपना काम ठीक-ठीक पूरा करता है। अत एव इस मृत्यु से बचने के लिए मुझे भी उसी पतितपावन प्रभु का आश्रय लेना चाहिए।

ऐसा सोचकर गजेन्द्र ने भगवान् की स्तुति की और संकट मुक्त हो कर बैकुण्ठ में चला जाता है। ग्राह की भी मुक्ति भगवान् के स्पर्श से हो जाती है।

स्कन्द एवं पद्मपुराण के अनुसार गज और ग्राह जय और विजय थे। एक बार मरुत्त राजा के निमन्त्रण से यज्ञ के लिए गए। उस यज्ञ में जय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'ब्रह्मा' बना और विजय 'याजक' हुआ। यज्ञ समाप्ति पर राजा ने इन्हें प्रभूत दक्षिणा दी। घर आने पर दक्षिणा के बटवारा के बारे में इनमें झगड़ा हुआ। अंत में जय ने विजय को, तुम मगर बनोगे। विजय ने भी जय को, तुम हाथी बनोगे' ऐसा शाप दिया। बाद में अपने अपने शाप पर इन दोनों को पछतावा हुआ और दोनों भाई विष्णु के शरण में गए। विष्णु ने आश्वासन दिया 'शाप पूरा होते ही मैं तुम दोनों का उद्धार करूँगा।'

शाप के अनुसार एक मगर होकर और दूसरा हाथी बनकर गंडकी (नारायणी) के किनारे रहने लगे। बाद में एक दिन हाथी कार्तिक स्नान के हेतु गंडकी नदी में उतरा। मगर ने उसका पैर पकड़ लिया। तब इसने विष्णु को पुकारा। विष्णु ने आकर दोनों का उद्धार किया। यह स्थान आजकल बिहार प्रान्त में हरिहरक्षेत्र के नाम से पुकारा जाता है कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर यहाँ स्नान का बड़ा भारी मेला लगता है यह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सोनपुर' के नाम से प्रसिद्ध है। इसे 'कोन्हिया' का मेला कहते हैं जो 'कवन हार' से 'कोन्हारा' बना बाद में 'कोन्हिया' कहलाता है। पुराणों के अनुसार गज-ग्राह की लड़ाई एक हजार वर्ष तक जारी रही। अस्तु,

प्रस्तुत 'गजेन्द्र-मोक्ष' भागवत के आधार पर नहीं है, अपितु वामन पुराणोक्त है। इस में गजेन्द्र को त्रिकूट पर्वतवासी बतलाया गया है और उसी पर्वत के पास के सरोवर में ग्राह का युद्ध वर्णित है। ग्राह का पूर्व जन्म यहाँ भी हूहू गन्धर्व है। वर्णन की शैली भागवतानुसारी न हो कर अपनी स्वतन्त्र विधा में गुंफित है। परन्तु भाषा बड़ी सरल है, अर्थबोध में कोई कठिनाई नहीं होती, साधारण संस्कृतज्ञ भी इसे अर्थबोध करते हुए पाठ कर सकता है। यहां बतलाया गया है कि जो कोइ इसका प्रातःकाल में नित्यपाठ करता है या श्रवण करता है। उसका दुःस्वप्न भाग जाता है, परम सिद्धि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिलती है । सम्पूर्ण पापों का शमन होता है, इसलिए भगवान् मुरारि श्री कृष्ण का यह परम पवित्र चरित्र गजेन्द्र-मोक्ष का सदैव कीर्तन करना चाहिए, इससे सांसारिक पाप-बन्धन छूट जायेंगे और अंत में मोक्ष लाभ होगा। गजेन्द्र ने अपनी स्तुति में निर्विशेष रूप से परम पिता परमेश्वर की स्तुति की थी इसी लिए उसकी सहायता में कोई अन्य देवता सीधे नहीं आये, मात्र गरुड़धारी विष्णु को ही आना पड़ा। परमात्मा के नामों की चर्चा से जीवन रसमय बनता है, साथ ही देहाभिमान तथा अहंकार रूपी शत्रु का समूल विनाश होता है; यह बात गजेन्द्र की वंदना-स्तुति से साबित होती है। इस कलिकाल के आंगन में शांति, सद्भाव और प्रेम का वृक्षारोपण के लिए प्रभु की स्तुति होनी चाहिए ताकि नया जीवन विकसित हो। अन्त में मैं चौखम्भा ओरियन्टालिया के प्रकाशक बन्धुओं को इस पुण्यदायी प्रकाशन के लिए धन्यवाद देता हूँ; साथ ही इस प्रस्तावना रूपी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रसूनों से भगवान् विष्णु नारायण का अभिषेक करता हूं तथा इस क्षणभंगुर जीवन में नवरंग की आशा करता हूँ । इति शिवम् ।

विनीत—

कपिलदेव गिरि

रवीन्द्रपुरी, काशी

मकर-संक्रान्ति

दिनाङ्क १५–१–१९८८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीपरमात्मने नमः ॥

गजेन्द्रमोक्षः

नारद उवाच

याज्ञप्यान्भगवद्भक्त्या प्रह्लादो दानवोऽजपत् ।
गजेन्द्रमोक्षणादींस्त्वं चतुरस्तान्वदस्व मे ॥ १ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुलस्त्य उवाच

शृणुष्व कथयिष्यामि जप्यानेतांस्तपोधन ।
दुःस्वप्ननाशो भवति यैरुक्तैःसस्मृतैःश्रुतैः ॥ २ ॥
गजेन्द्रमोक्षणं त्वादौ शृणु त्वं तदनन्तरम् ।
सारस्वतौ ततः पुण्यौ पापप्रशमनौ स्तवौ ॥ ३ ॥
सर्वरत्नमयः श्रीमांस्त्रिकूटो नाम पर्वतः ।
सुतः पर्वतराजस्य सुमेरोर्भास्करद्युतेः ॥ ४ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षीरोदजलवीच्यग्रैर्धौतामलशिलातलः ।
उत्थितः सागरं भित्त्वा देवर्षिगणसेवितः ॥ ५ ॥
अप्सरोभिः परिवृतः श्रीमान्प्रस्रवणाकुलः ।
गन्धर्वैः किन्नरैर्यक्षैः सिद्धचारणगुह्यकैः ॥ ६ ॥
विद्याधरैः सपत्नीकैः संयतैश्च तपस्विभिः ।
वृकद्वीपिगजेन्द्रैश्च धृतगात्रो विराजते ॥ ७ ॥
पुन्नागैः कर्णिकारैश्च बिल्वामलकपाटलैः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चूतनीपकदम्बैश्च चन्दनागुरुचम्पकैः ॥ ८ ॥
शालैस्तालैस्तमालैश्च सरलार्जुनपर्पटैः
यथान्यैर्विविधैर्वृक्षैः सर्वतः समलङ्कृतः ॥ ९ ॥
नाना धात्वङ्कितैः शृङ्गैः प्रस्रवद्भिः समन्ततः ।
शोभितो रुचिरप्रस्थैस्त्रिभिर्विस्तीर्णसानुभिः ॥१०॥
मृगैः शाखामृगैः सिंहैर्मातङ्गैश्च सदामदैः ।
जीवं जीवकसंघुष्टैश्चकोरशिखिनादितैः ॥११॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्यैकं काञ्चनं शृङ्गं सेवते यद्दिवाकरः ।
नानापुण्यसमाकीर्णं नानागन्धादिवासितम् ॥१२॥
द्वितीयं राजतं शृङ्गं सेवते यन्निशाकरः ।
पाण्डुराम्बुदसङ्काशं तथा रत्नचयोपमम् ॥१३॥
वज्रेन्द्रनीलवैडूर्यतेजोभिर्भासयन्दिशः ।
तृतीयं ब्रह्मसदनं प्रहृष्टं शृङ्गमुत्तमम् ॥१४॥
न तत्कृतघ्नाः पश्यन्ति नृशंसा नैव राक्षसाः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नातप्ततपसो लोके ये च पापकृतो जनाः ॥१५॥
तस्य सानुमतः पृष्ठे सरः काञ्चनपङ्कजम् ।
कारण्डवसमाकीर्णं राजहंसोपशोभितम् ॥१६॥
कुमुदोत्पलकह्लारैः पुण्डरीकैश्च शोभितम् ।
कमलैःशतपत्रैश्च काञ्चनैः समलङ्कृतम् ॥१७॥
पत्रैर्मरकतप्रख्यैः पुष्पैः काञ्चनसन्निभैः ।
गुल्मैः कीचकवेणूनां समन्तात्परिवेष्टितम् ॥१८॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तस्मिन्सरसि दुष्टात्मा निगूढोऽन्तर्जलेशयः ।
आसीद्ग्राहो गजेन्द्राणां दुराधर्षो महाबलः ॥१९॥
अथ दन्तोज्ज्वलवपुः कदाचिद्गजयूथपः ।
मदस्रावी जलाकाङ्क्षी पादचारीव पर्वतः ॥२०॥
वासयन्मदगन्धेन गिरिमैरावतोपमः ।
स गजोऽञ्जनसङ्काशो मदाघूर्णितलोचनः ॥२१॥
तृषितः स्नातुकामोऽसाववतीर्णश्च तज्जलम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सलील: पङ्कजवने यूथमध्यगतस्त्वरन् ॥२२॥
गृहीतस्तेन रौद्रेण ग्राहेणाव्यक्तमूर्तिना ।
पश्यन्तीनां करेणूनां क्रोशन्तीनां च दारुणम् ॥२३॥
ह्रियते पङ्कजवने ग्राहेणातिवलीयसा ।
गज आकर्षते तीरं ग्राह आकर्षते जलम् ॥२४॥
तयोर्दिव्यं महायुद्धं जातं वर्षसहस्रकम् ।
वारुणैः संवृतः पाशैर्निष्प्रयत्नगतिः कृतः ॥२५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वेष्टयमानः सुघोरैस्तु पाशैर्नागो दृढैस्तथा ।
विस्फूर्य च यथाशक्ति विक्रोशश्च महारवान् ॥२६॥
व्यथितः सन्निरुच्छ्वासो गृहीतो घोरकर्मणा ।
परमामापदं प्राप्य मनसाचिन्तयद्धरिम् ॥२७॥
स तु नागवरः श्रीमान्नारायणपरायणः ।
तमेव शरणं देवं गतः सर्वात्मना तदा ॥२८॥
एकात्मानुगृहीतात्मा विशुद्धेनान्तरात्मना ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जन्मजन्मान्तराभ्यासाद्भक्तिमान्गरुडध्वजे ॥२९॥
आद्यं देवं महादेवं पूजयामास केशवम् ।
मथितामृतफेनाभं शङ्खचक्रगदाधरम् ॥३०॥
सहस्रशुभनामानमादिदेवमजं विभुम् ।
प्रगृह्य पुष्कराग्रेण काञ्चनं कमलोत्तमम् ।
आपद्विमोक्षमन्विच्छन्गजः स्तोत्रमुदीरयत् ॥३१॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गजेन्द्र उवाच

ॐ नमो मूलप्रकृतये अजिताय महात्मने ।
अनाश्रिताय देवाय निःस्पृहाय नमोऽस्तु ते ॥३२॥
नम आद्याय वामाय आर्षायादिप्रवर्तिने ।
अनन्तरायचैकाय अव्यक्ताय नमो नमः ॥३३॥
नमो गुह्याय गूढाय गुणाय गुणवर्तिने ।
अतर्क्यायाप्रमेयाय अतुलाय नमो नमः ॥३४॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमः शिवाय शान्ताय निश्चिन्ताय यशस्विने ।
सनातनाय पूर्वाय पुराणाय नमो नमः ॥३५॥
नमोऽस्तु तस्मै देवाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
नमो जगत्प्रतिष्ठाय गोविन्दाय नमो नमः ॥३६॥
नमोऽस्तु पद्मनाभाय सांख्ययोगोद्भवाय च ।
विश्वेश्वराय देवाय शिवाय हरये नमः ॥३७॥
नमोऽस्तु तस्मै देवाय निर्गुणाय गुणात्मने ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नारायणाय विश्वाय देवाय परमात्मने ॥३८॥

नमो नमः कारणवामनाय
नारायणायामितविक्रमाय
श्रीशार्ङ्गचक्रासिगदाधराय
नमोऽस्तु तस्मै पुरुषोत्तमाय ॥३९॥

गुह्याय वेदनिलयाय महोरगाय
सिंहाय दैत्यनिधनाय चतुर्भुजाय।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिचारणसंस्तुताय ।
देवोत्तमाय सकलाय नमोऽच्युताय ॥४०॥

नागेन्द्रभोगशयनाय च सुप्रियाय
गोक्षीरहेमशुकनीलघनोपमाय
पीताम्बराय मधुकैटभनाशनाय
विश्वाय चारुमुकुटाय नमोऽक्षराय ॥४१॥

नाभिप्रजातकमलस्थचतुर्मुखाय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षीरोदकार्णवनिकेतयशोधराय ।
नानाविचित्रकनकाङ्गदभूषणाय
सर्वेश्वराय वरदाय नमो वराय ॥४२॥
भक्तिप्रियाय वरदीप्तसुदर्शनाय
देवेन्द्रविघ्नशमनोद्यतपौरुषाय ।
फुल्लारविन्दविमलायतलोचनाय
योगेश्वराय वरदाय नमो वराय ॥४३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ब्रह्मायनाय त्रिदशायनाय
लोकायनायात्महितायनाय ।
नारायणायात्मविकाशनाय
महावराहाय नमस्करोमि ॥४४॥

कूटस्थमव्यक्तमचिन्त्यरूपं
नारायणं कारणमादिदेवम् ।
युगान्तशेषं पुरुषं पुरातनं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तं देवदेवं शरणं प्रपद्ये ॥४५॥
योगेश्वरं चारुविचित्रमौलि-
मज्ञेयमग्र्यं प्रकृतेः परस्थम् ।
क्षेत्रज्ञमात्मप्रभवं वरेण्यं
तं वासुदेवं शरणं प्रपद्ये ॥४६॥
अदृश्यमव्यक्तमचिन्त्यमव्ययं
ब्रह्मर्षयो ब्रह्ममयं सनातनम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वदन्ति यं वै पुरुषं सनातनं
तं देवगुह्यं शरणं प्रपद्ये ॥४७॥
यदक्षरं ब्रह्म वदन्ति सर्वगं
निशम्य यं मृत्युमुखात्प्रमुच्यते ।
तमीश्वरं तृप्तमनुत्तमैर्गुणैः
परायणं विष्णुमुपैमि शाश्वतम् ॥४८॥
कार्यं क्रियाकारणमप्रमेयं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हिरण्यनाभं वरपद्मनाभम् ।
महाबलं देवनिधिं सुरेशं
व्रजामि विष्णुं शरणं जनार्दनम् ॥४९॥

किरीटकेयूरमहार्हनिष्कै-
र्मण्युत्तमालङ्कृतसर्वगात्रम् ।
पीताम्बरं काञ्चनभक्तिचित्रं
मालाधरं केशवमभ्युपैमि ॥५०॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नारोद्भवं वेदविदां वरिष्ठं
योगात्मनां सांख्यविदां वरिष्ठम् ।
आदित्यरुद्राश्विवसुप्रभावं
प्रभुं प्रपद्येऽच्युतमादिभूतम् ॥५१॥
श्रीवत्साङ्कं महादेवं देवगुह्यं मनोरमम् ।
प्रपद्ये सूक्ष्ममतुलं वरेण्यमभयप्रदम् ॥५२॥
प्रभवं सर्वभूतानां निर्गुणं परमेश्वरम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रपद्ये मुक्तसङ्गानां यतीनां परमां गतिम् ॥५३॥
भगवन्तं गुणाध्यक्षमक्षरं पुष्करेक्षणम् ।
शरण्यं शरणं भक्त्या प्रपद्ये भक्तवत्सलम् ॥५४॥
त्रिविक्रमं त्रिलोकेशं सर्वेषां प्रपितामहम् ।
योगात्मानं महात्मानं प्रपद्येऽहं जनार्दनम् ॥५५॥
आदिदेवमजं शम्भुं व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् ।
नारायणमणीयांसं प्रपद्ये ब्राह्मणप्रियम् ॥५६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नमो हराय देवाय नमः सर्वसहाय च ।
प्रपद्ये देवदेवेशमणीयांसं तनोः सदा ॥५७॥
एकाय लोकतत्त्वाय परतः परमात्मने ।
नमः सहस्रशिरसे अनन्ताय महात्मने ॥५८॥
त्वामेव शरणं देवमृषयो वेदपारगाः ।
कीर्तयन्ति च यं सर्वे ब्रह्मादीनां परायणम् ॥५९॥
नमस्ते पुण्डरीकाक्ष भक्तानामभयप्रद ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अब्रह्मण्य नमस्तेऽस्तु त्राहि मां शरणागतम् ॥६०॥

पुलस्त्य उवाच

भक्तिं तस्यानुसञ्चिन्त्य नागस्यामोघसम्भवः ।
प्रीतिमानभवद्विष्णुः शङ्खचक्रगदाधरः ॥६१॥
सान्निध्यं कल्पयामास तस्मिन्सरसि केशवः ।
गरुडस्थो जगत्स्वामी लोकाधारस्तपोधन ॥६२॥
ग्राहग्रस्तं गजेन्द्रं तं तं च ग्राहं जलाशयात् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उज्जहाराप्रमेयात्मा तरसा मधुसूदनः ॥६३॥
जलस्थं दारयामास ग्राहं चक्रेण माधवः ।
मोक्षयामास नागेन्द्रं पाशेभ्यः शरणागतम् ॥६४॥
एवं हि देवशापेन हूहूर्गन्धर्वसत्तमः ।
ग्राहत्वमगमत्कृष्णान्मोक्षं प्राप्य दिवं गतः ॥६५॥
गजोऽपि विष्णुना स्पृष्टो जातो दिव्यवपुः पुमान् ।
पापाद्विमुक्तौ युगपद्गजगन्धर्वसत्तमौ ॥६६॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रीतिमांपुण्डरीकाक्षः शरणागतवत्सलः ।
अभवत्त्वथ देवेशस्ताभ्यां चैव प्रपूजितः ॥६७॥
इदं च भगवान्योगी गजेन्द्रं शरणागतम् ।
प्रोवाच मुनिशार्दूल मधुरं मधुसूदनः ॥६८॥

श्रीभगवानुवाच

ये मां त्वां च सरश्चेदं ग्राहस्य च विदारणम् ।
गुल्मकीचकवेणूनां रूपं मेरुसुतस्य च ॥६९॥
अश्वत्थं भास्करं गङ्गां नैमिषारण्यमेव च ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

संस्मरिष्यन्ति मनुजाः प्रयताः स्थिरबुद्धयः ॥७०॥
कीर्तयिष्यन्ति भक्त्या च श्रोष्यन्ति च शुचिव्रताः ।
दुःस्वप्नो नश्यते तेषां सुस्वप्नश्च भविष्यति ॥७१॥
मात्स्यं कौर्मं च वाराहं वामनं तार्क्ष्यमेव च ।
नारसिंहं च नागेन्द्रं सृष्टिप्रलयकारकम् ॥७२॥
एतानि प्रातरुत्थाय संस्मरिष्यन्ति ये नराः ।
सर्वपापैः प्रमुच्यन्ते पुण्याँल्लोकानवाप्नुयुः ॥७३॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुलस्त्य उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशो गजेन्द्रं गरुडध्वजः ।
स्पर्शयामास हस्तेन गजं गन्धर्वमेव च ॥७४॥
ततो दिव्यवपुर्भूत्वा गजेन्द्रो मधुसूदनम् ।
जगाम विष्णुं शरणं नारायणपरायणः ॥७५॥
ततो नारायणः श्रीमान्मोक्षयित्वा गजोत्तमम् ।
पापबन्धाच्च शापाच्च ग्राहं चाद्भुतकर्मकृत् ॥७६॥
ऋषिभिः स्तूयमानश्च देवगुह्यपरायणैः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ततः स भगवान्विष्णुर्दुर्विज्ञेयगतिः प्रभुः ॥७७॥
गजेन्द्रमोक्षणं दृष्ट्वा देवाः शक्रपुरोगमाः ।
ववन्दिरे महात्मानं प्रभुं नारायणं हरिम् ॥७८॥
महर्षयश्चारणाश्च दृष्ट्वा गजविमोक्षणम् ।
विस्मयोत्फुल्लनयनाः संस्तुवन्ति जनार्दनम् ॥७९॥
प्रजापतिपतिर्ब्रह्मा चक्रपाणेर्विचेष्टितम् ।
गजेन्द्रमोक्षणं दृष्ट्वा इदं वचनमब्रवीत् ॥८०॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

य इदं शृणुयान्नित्यं प्रातरुत्थाय मानवः ।
प्राप्नुयात्परमां सिद्धिं दुःस्वप्नश्च विनश्यति ॥८१॥
गजेन्द्रमोक्षणं पुंसां सर्वपापप्रणाशनम् ।
कथितेन स्मृतेनाथ श्रुतेन च तपोधन ॥८२॥
एतत्पवित्रं परमं सुपुण्यं
सङ्कीर्तनीयं चरितं मुरारेः ।
यस्मिन्किलोक्ते बहुपापबन्धना-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लभेत मोक्षं द्विरदो नु यद्वत् ॥८३॥

अजं वरेण्यं वरपद्मनाभं
नारायणं ब्रह्मनिधिं सुरेशम् ।
तं देवगुह्यं पुरुषं पुराणं
वन्दाम्यहं लोकपतिं वरेण्यम् ॥८४॥

इति श्रीवामनपुराणे वामनप्रादुर्भावे गजेन्द्रमोक्षणं
नाम पञ्चाशीतितमोऽध्यायः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्तोत्र-ग्रन्थाः

गङ्गालहरी । पण्डितराजजगन्नाथ निरचिता । 'सरला' हिन्दी व्याख्या सहिता । व्याख्याकार–उमेश मिश्र गौड

ब्रह्मसूत्रम् । (शारीरकमीमांसादर्शनम्), (मूल) सम्पादक–कपिलदेव गिरि

दुर्गाकवचम् । अर्गला कील पुराणोक्त रात्रिसूक्तम्

त्रैलोक्यमङ्गलं सूर्यकवचम् । (सूर्यस्तोत्रावली) सूर्यप्रातःस्मरणस्तोत्रम् । श्रीसूर्यमण्डलाष्टकम्–आदित्यहृदयोक्तम् । सूर्याष्टकम्–शिवप्रोक्तम् । सूर्यकवच-स्तोत्रम्–याज्ञवल्क्यविरचितम् । सूर्याष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्–महाभारतेवैशम्पाय-नोक्तम् । सूर्यस्तवराजः–वशिष्ट प्रणीतम् । सूर्यार्थस्तोत्रम्–याज्ञवल्क्यविरचितम् । सूर्यस्तोत्रम् । सूर्यस्तोत्रम्–याज्ञवल्क्यविरचितम् । सूर्याथर्वशीर्षम्–अथर्वाऋषि-प्रोक्तम् तथा आदित्यहृदयस्तोत्रम्–अगस्त्योक्तम्

दकारादि-दुर्गासहस्रनामस्तोत्रम् । दुकारादि-दुर्गासहस्रनामावली । सम्पादक उमेशकुमार शर्मा गौड़

श्रीलक्ष्मीनारायणहृदयम् । नारायणाष्टोत्तरशतनामस्तोत्र

अन्य प्राप्तिस्थान—(१) चौखम्भा ओरियन्टालिया
बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर, दिल्ली–११०००७
(२) चौखम्भा भारती अकादमी खजान्ची रोड, पटना–८००००४